|| NAMO TITTHASSA ||

GACCHADHIPATI (SPIRITUAL SOVEREIGN)
JAINACHARYA SHRIMADVIJAY
YUGBHUSHANSURI
(PANDIT MAHARAJ SAHEB)

वि.सं.२०७८ पोष वदि १२

ता.29-1-2022 शनिवार

बोरिवली-मुंबई

ज़ाहिर स्पष्टीकरण

Ref:202201H-04

श्री शत्रुंजय महातीर्थ से संबंधित नीलकंठ महादेव मामले की एफिडेविट आदि में शास्त्र एवं कानूनी दृष्टिकोण से जो असाधारण हानिकारक प्रस्तुतियाँ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी की ओर से की गई है, उनके संभवित भावी नुकसान की जानकारी तटस्थ समीक्षात्मक निवेदनो के माध्यम से मैंने ज़ाहिर की है। क्योंकि इसके अलावा अन्य किसी प्रकार से अर्थात पत्र का जवाब देने या व्यक्तिगत रूप से मिलकर सुनने हेतु, शासन रक्षा जैसे गंभीर मुद्दे पर भी पेढ़ी तैयार नहीं होती , ऐसा भूतकाल के अनेक अनुभवों से निश्चित रूप से मैंने समझा है। ढ़ेर सारे अनुभव ऐसे हुए हैं कि उपरोक्त केस के मुद्दों जैसे या उससे भी अत्यंत गंभीर, शासन और तीर्थ को नुकसान कारक मुद्दों के उपाय करने के बजाय पेढ़ी द्वारा उन मुद्दों को दबा देने के ही प्रयत्न किए गए है । अभी भी ऐसे ही अनुभवों में एक अनुभव की बढ़ोतरी पेढ़ी ने कराई है, क्योंकि नीलकंठ महादेव केस के अत्यंत हानिकारक मुद्दों के विषय में मेरे द्वारा की गई मुद्दानुसार प्रस्तुति के स्पष्टीकरण के रूप में पेढ़ी की ओर से मुद्दों को छुए बिना ही उसे 'भ्रामक', 'मनघड़ंत', 'शाब्दिक जाल' आदि टाइटल देते हुए तीर्थ रक्षा के गंभीर प्रश्न को खुलेआम भी दबा देने का प्रयास किया गया है ।

वास्तव में यदि आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी खुद को ज़िम्मेदार मानती हो, खुद की ज़िम्मेदारी समझती हो तो धर्माचार्यों को योग्य मुद्दानुसार जवाब देने की ज़िम्मेदारी, उसके ज़िम्मेदार ट्रस्टीयो को अदा करनी ही चाहिए । लेकिन अभी तक पेढ़ी ने मुझे व्यक्तिगत तौर पर या ज़ाहिर रूप से कोई स्पष्टीकरण दिया नहीं है, जो शासन के लिए अत्यंत आघात जनक है ।

ऐसे संयोगों में आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी सभी खुलासे और जवाब देने के दावे के साथ ज़ाहिर में आए है। मूल मुद्दों के साथ अप्रासंगिक विषयों की मिलावट कर सोशियल मीडिया में प्रचार

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai 80, India
Whatsapp No.: +91 99300 11400 | Email: info@jyot.in

Scanned with CamScanner

करा रहे हैं । और तो और, वे ऐसा घोषित कर रहे हैं कि तपागच्छीय एक तिथि पक्ष की सर्वोच्च गिनी जाती प्रवर समिति ने शत्रुंजय श्रमण समिति का अध्यक्ष पद शासन प्रभावक पू.आचार्य श्री पद्मसागरसूरिजी म.सा.को सौंपा है और उनके आदेश से शत्रुंजय संबंधित कार्य अन्य महात्माओं और पेढ़ी से जुड़े रहकर वे (आ.श्री अजयसागरसूरिजी) साढे चार वर्षों से संभाल रहे हैं । और इस केस की एफिडेविट आदि की जांच करके उन्होंने स्वीकृति दी है । अतः पेढ़ी नहीं बल्कि वे (आ.श्री अजयसागरसूरिजी) ही उसके स्पष्टीकरण देंगे, इस प्रकार का उनका अभिगम रहा है ।

साथ ही कुछ समय पूर्व वडील आचार्य श्री विजय शीलचंद्रसूरिजी म.सा. ने मूल मुद्दों को स्पर्श किए बगैर उपरोक्त केस की चर्चा में प्रवेश करके बहारों बाहर ही पेढ़ी का पक्ष लेने वाले, समर्थन करने वाले पत्र सोशियल मीडिया में प्रसिद्ध कराए हैं, श्री संघ के हित में बाधक बनती पेढ़ी की भूलों को बताने वाले दिग्गज आचार्य श्री नेमिसूरिजी की भी बात नहीं मानने वाली - अर्थापत्ति से संघ के हित को भी नजरअंदाज करने वाली पेढ़ी के प्रति पक्षपात व्यक्त करने वाला लेख भी सोशियल मीडिया में प्रसिद्ध कराया हैं । गौरतलब है कि आचार्य श्री विजय शीलचंद्रसूरिजी तपागच्छीय एक तिथि पक्ष के मुख्य सलाहकार के रूप में प्रसिद्ध है, ऐसा सुना जाता है ।

मूल पक्षकार सिवाय के व्यक्तियों का ज़ाहिर चर्चा में प्रवेश होने पर एक खुलासा करना अत्यंत आवश्यक बना है । संघ और शासन के हित में जनजागृति या भूल सुधारने हेतु जो कोई विचार विमर्श या ज़ाहिर विधान किए जाते हो, उनमें साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका के तौर पर चतुर्विध संघ के प्रत्येक सदस्य को मर्यादा बनाए रखनी अत्यंत जरूरी है । मन मुताबिक बेबुनियादी आरोप लगाना मर्यादा का उल्लंघन है । गंदी राजनीति में भी कुछ सभ्यता के नियमों का पालन आवश्यक होता है। जबकि यह तो पवित्र धर्मक्षेत्र है। यहां मनचाहे तरीके से बगैर किसी आधार के आक्षेपबाजी , वह भी खुलेआम, कैसे मंजूर की जा सकती है ?

तारीख 26 अक्टूबर 2021 के बाद थोड़े ही समय में जारी किए गए व्हाट्सएप मैसेज में आचार्य श्री अजयसागरसूरि जी कहते हैं कि

> *'..... ઉપરાંત તેઓ ખરેખર કોના હિતમાં કામ કરી રહ્યા છે તે મુદ્દો પણ અમો તેઓના ધ્યાન ઉપર લાવ્યા હતા. દેખાવ શાસન તથા તીર્થ હિતનો કરે છે પણ વર્તનમાં ક્યારેક તપાગચ્છ વિરોધી અન્ય ગચ્છની ખોટી વાતોને સાચી ઠેરવે છે, ક્યાંક મૂર્તિપૂજક વિરોધીઓને જ્યાં તેમના કોઇ હક્ક નથી, તેઓને જે જોઇતા જ નથી તેવા તેમના હક્કો માટે તીર્થરક્ષાના નામે કોર્ટ*

Scanned with CamScanner

કાર્યવાહી કરે છે. અમુક કેસોમાં તેઓ એ રીતે વર્તે છે કે જેથી દિગંબરોને બેઠો ફાયદો થાય, અને અત્યારે જે ઉપાડો લીધો છે તેમાં તો મૂળથી જ જે જિનશાસન વિરોધી છે તથા શત્રુંજય તીર્થ આખું પચાવી લેવાના કાવત્રા કરનારી જૈનોનું ખાઈને જૈનોનું ખોદનારી એક કુખ્યાત ટોળકી છે તે ટોળકીને સમર્થન મળે તે રીતની પ્રવૃત્તિ થઈ રહી છે.....'

("..... साथ ही वास्तव में वे किसके हित में काम कर रहे हैं उस मुद्दे पर भी हमने उनका ध्यान आकर्षित किया था। दिखावा शासन एवं तीर्थ के हित का कर रहे हैं लेकिन व्यवहार में कभी तपागच्छ विरोधी अन्य गच्छ की गलत बातों को भी सही ठहराते हैं, कहीं पर मूर्तिपूजक विरोधियों को, जहां उनका कोई अधिकार नहीं है, उन्हें जो चाहिए ही नहीं वैसे उनके अधिकारों के लिए तीर्थ रक्षा के नाम पर कानूनी कार्यवाही कर रहे हैं। कुछ मुकद्दमे में वे इस तरह वर्तन कर रहे हैं कि जिससे दिगंबरों को सीधा फायदा हो, और अब जो अभियान चलाया है उसमें तो मूल से ही जो जिनशासन के विरोधी हैं और पुरा शत्रुंजय तीर्थ हजम करने का षड्यंत्र रचने वाली, जैनों का खाकर जैनों को ही नुकसान पहुंचाने वाली एक कुख्यात टोली है उसे समर्थन मिले उस प्रकार की प्रवृत्ति हो रही है....")

यहां बिना किसी आधार के ज़ाहिर तौर पर उन्होंने एक जिम्मेदार धर्माचार्य पर शासन के प्रति गद्दारी का अत्यंत निम्न कक्षा का आरोप लगाया है।

इसी प्रकार वडील आचार्य श्री शीलचंद्रसूरिजी ने वि.सं. 2077 आसोज सुद 1 के दिन जारी किए गए हिंदी पत्र में इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है –

'..... उन्हें पेढी को मिला यह विजय हजम नहीं हुआ, बल्कि गलत लगा है, अतः वे नाराज हैं। इन थोडे लोगों में साधु भी है, गृहस्थ भी। कपडे पहन रखे हैं, अतः साधु ही कहना पडेगा, अन्यथा तीर्थरक्षा पर नाराज होकर इस विजय को गलत बतानेवालों को साधु कैसे माना जाय? उन लोगों ने कुछ लिखापट्टी शुरू कर दी है, और उसका मीडिया में एवं सोश्यल मीडिया में प्रचार-प्रसार भी वे करने लगे हैं। वे लोग जो भी लिखते हैं वह ऐसा है कि उसमें लिखे गये मुद्दों से जैन संघ व तीर्थ के (जो पराजित हुए हैं) विरोधियों को ही बल मिल सकता है, और उनका पक्ष प्रबल व हमारा पक्ष जरा शिथिल बन सकता है। शायद इन लोगों की यही मुराद भी है ऐसा लग रहा है.....'

याने एक धर्माचार्य और उनके श्रमण समुदाय पर सिर्फ वेषधारी साधु होने और शासनद्रोही होने का कनिष्ठ आरोप लगाया है ।

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai 80, India
Whatsapp No.: +91 99300 11400 | Email: info@jyot.in

Scanned with CamScanner

यहां प्रवरसमिति के पूज्य आचार्य भगवन्तों का कर्तव्य बनता है कि उन आचार्यश्रीयों द्वारा शासनद्रोही और सिर्फ वेषधारी साधु होने का जो आरोप लगाया गया है, उसे समस्त संघ को एकत्रित कर दोनों पक्षों को मान्य तटस्थ समिति नियुक्त कर प्रामाणिकता से आधार पूर्वक साबित कराकर मुझे कठोर से कठोर दंड दिलवाए । अथवा उपरोक्त आरोप यदि बेबुनियाद साबित हो तो वे आरोप वापस खिंचवाकर ज़ाहिर में मिच्छा मि दुक्कड़म् दिलाना पड़ेगा ।

जब तक यह नहीं होता तब तक इतने निम्न स्तर तक जाने वालों के साथ हमें कोई बात करने की रहती नहीं है । हमारे इस अभिगम को आचार्य श्री शीलचंद्रसूरिजी के पत्र में से ही समर्थन मिलता है । इसी महीने के प्रथम दिन उनके द्वारा लिखे गए पत्र के शब्द देखें:

'.....જ્યારે કોઇ યુક્તિ કે વાજબી વાત ન હોય ત્યારે માણસ અસંગત પ્રલાપો કરે છે; હીન શબ્દો આમતેમ ફંગોળે છે. વિતંડા, કુતર્ક અને અસભ્યતા આવી જ પ્રવૃત્તિમાં જડે.

શાણો માણસ આનાથી દૂર રહે, અને પોતાની ખાનદાનીને જાળવી રાખે, એ જ એનું ઉચિત કૃત્ય ગણાય.....'

('...जब कोई युक्ति या वाजिब बात न हो तब व्यक्ति असंगत प्रलाप करता है ; निम्न शब्दों का जैसे तैसे प्रयोग करता है । वितंडा, कुतर्क और असभ्यता इसी प्रवृत्ति में दिखते हैं।

समझदार व्यक्ति इस से दूर रहे, और अपनी खानदानीयत को बनाए रखे, यही उसका उचित कर्तव्य गिना जाता है....')

साथ ही, मेरा मार्गदर्शन चाहने वाले सभी साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओं को खास आदेश देता हूं कि उपरोक्त परिस्थिति का निवारण ना हो तब तक 30 जनवरी 2022 को प्रेरणातीर्थ, अहमदाबाद में आयोजित 'असत्य के सामने सत्य का प्रकाश ' सभा में जाकर या आगे भी अन्य किसी तरीके से उनके पास स्पष्टीकरण मांगने, समाधान प्राप्त करने या चर्चा करने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। इस बात का सभी ध्यान रखें ।

द. ग. आ. विजय युगभूषणसूरी

(ग. आ. विजय. युगभूषणसूरि)

Education Book Centre, 133, Gala Complex, Din Dayal Upadhyay Road, Mulund (W), Mumbai 80, India
Whatsapp No.: +91 99300 11400 | Email: info@jyot.in

Scanned with CamScanner